Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# RAS

# राजस्थान प्रशासनिक सेवा

## राजस्थान लोक सेवा आयोग

## भाग - 3

## भारत का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

# INDEX


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | सिंधु घाटी सभ्यता | 1 |
| 2 | वैदिक काल | 7 |
| 3 | आजीविक, जैन धर्म और बौद्ध धर्म | 13 |
| 4 | महाजनपद, मौर्य और मौर्योत्तर युग | 23 |
| 5 | गुप्त काल | 34 |
| 6 | चोल, चालुक्य और पल्लव राजवंश | 39 |
| 7 | प्राचीन भारत में कला एवं स्थापत्य | 45 |
| 8 | भारतीय ज्ञान एवं मूल्य प्रणाली | 56 |
| 9 | प्राचीन भारत में भाषा और साहित्य | 64 |
| 10 | दिल्ली सल्तनत (1206–1526 AD) | 68 |
| 11 | विजयनगर साम्राज्य | 78 |
| 12 | मुग़लकाल (1526–1857) | 82 |
| 13 | मध्यकालीन काल में कला और वास्तुकला | 92 |
| 14 | भक्ति और सूफी आंदोलन | 96 |
| 15 | ब्रिटिश साम्राज्यवाद और प्रतिरोध | 104 |
| 16 | 1857 तक का प्रशासन | 113 |
| 17 | 1857 का विद्रोह | 117 |
| 18 | 1858 के पश्चात् प्रशासनिक परिवर्तन | 123 |
| 19 | शिक्षा एवं प्रेस का विकास | 126 |
| 20 | सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन | 132 |
| 21 | राष्ट्रवाद का जन्म (मध्यम चरण 1885–1905) | 145 |
| 22 | उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग चरमपंथी चरण | 151 |
| 23 | जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917–1925) | 164 |

# INDEX


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 24 | स्वराज के लिए संघर्ष (1925–1939) | 173 |
| 25 | स्वतंत्रता की ओर (1940–1947) | 189 |
| 26 | स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण | 198 |
| 27 | महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ | 208 |

# 1 CHAPTER सिंधु घाटी सभ्यता

**पिछले वर्ष के प्रश्न**

Q1. निम्नलिखित में से किसके द्वारा 'सुरकोटड़ा' नामक हड़प्पा संस्कृति के स्थल की खोज की गई थी ? (2023)

(1) बी.बी. लाल (2) एस. आर. राव

(3) वाई. डी. शर्मा (4) जगतपति जोशी

Q2. धोलावीरा (गुजरात) हाल ही में खबरों में क्यों था? (2021)

(1) टाइगर रिज़र्व घोषित हुआ

(2) हाल ही में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किया गया

(3) राष्ट्रीय उद्यानों की सूची में शामिल किया गया

(4) यह स्थल आतंकी हमले का शिकार हुआ था

**विश्लेषण** विगत परिक्षाओं में आए प्रश्नों को आधार मानकर , इस अध्याय में सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थलों, उनके खोजकर्ताओं और उनकी विशिष्ट विशेषताओं का समावेशन किया गया है, क्योंकि ये परीक्षा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, इस सभ्यता के अन्य संबंधित पहलुओं को भी विस्तारित रूप से परीक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार शामिल किया गया है।

## सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार:

- ✓ सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे कांस्य युग या हड़प्पा सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है, एक शहरी सभ्यता थी जो सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के आसपास विकसित हुई थी। यह सभ्यता लगभग 2600 ईसा पूर्व और 1700 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली।

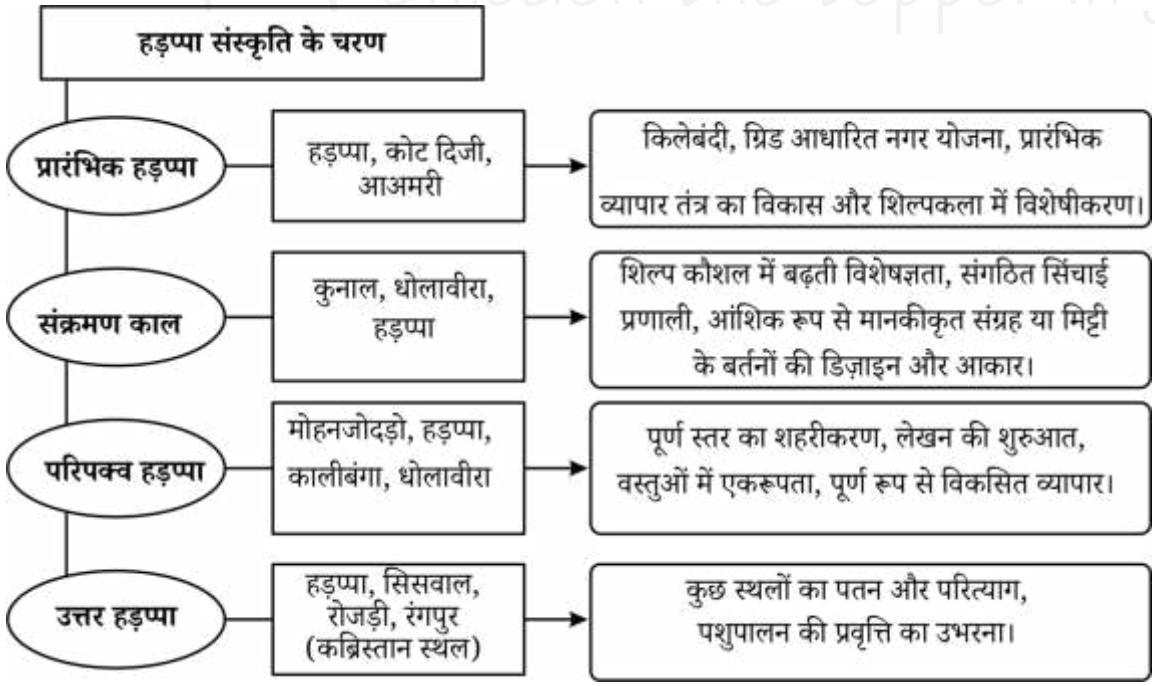

✓ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक जॉन मार्शल द्वारा इसे "सिंधु घाटी सभ्यता" नाम दिया गया था। प्रथम उत्खनित स्थल हड़प्पा था, जिसे दया राम साहनी ने वर्ष 1921 में खोजा था, इसी कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।

**नोट: अलेक्जेंडर कनिंघम** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के **प्रथम** अध्यक्ष थे, तथा उन्हें पुरातत्व के जनक के रूप में भी जाना जाता है।

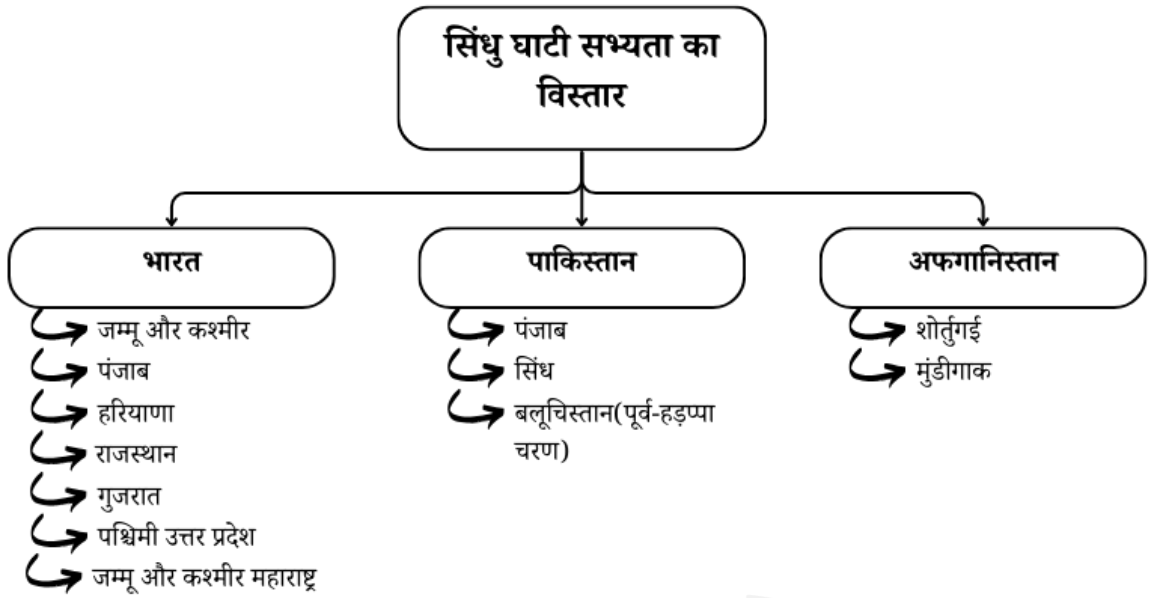

- सबसे उत्तरी स्थल - मांडा (जम्मू और कश्मीर)
- सबसे दक्षिणी स्थल - दैमाबाद (महाराष्ट्र)
- सबसे पूर्वी स्थल - आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)
- सबसे पश्चिमी स्थल - सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)

## सिंधु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताएं.

**1. नगर नियोजन :**

➢ **कस्बे को दो भागों में विभाजित किया गया था: :**

**a) किला -:**

✓ किला, जिसे अक्सर 'एक्रोपोलिस' कहा जाता है, यह प्राचीन नगरों जैसे हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और कालीबंगा का ऊँचा और अधिक संकुचित भाग था।

✓ यह दीवारों से घिरा होता था और निचले कस्बे से भौतिक रूप से अलग होता था।

- लोथल में, किला दीवारों से घिरा हुआ नहीं था, लेकिन इसे ऊँचाई पर बनाया गया था।

✓ यह क्षेत्र राजाओं, पुरोहितों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों के निवास के लिए उपयोग में आता था, साथ ही यहाँ प्रशासनिक भवन, अन्नागार और सार्वजनिक स्नानागार भी होते थे। किला इन प्रारंभिक शहरी बस्तियों के संगठन और शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

**b) निचला** क़स्बा **- :**

- ✓ निचला क़स्बा, जो ऊँचाई में कम लेकिन आकार में बड़ा होता था, यह प्राचीन नगरों में साधारण लोगों के रहने का क्षेत्र था। यह हिस्सा भी दीवारों से घिरा होता था, जो इसके निवासियों को सुरक्षा प्रदान करता था।

**टिप्पणी:**

- ➢ किले विहीन शहर: चन्हूदड़ो

**c) ग्रिड प्रणाली:**

- ✓ सड़कें और गलियां एक - दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

**d) विशाल स्नानागार:**

- ✓ मोहनजोदड़ो के एक आंगन में एक विशाल आयताकार स्नानागार बनाया गया था, जो चारों ओर से गलियारों से घिरा हुआ था। पकी हुई ईंटों का बना इसका फर्श जिप्सम मोर्टार से जलरोधी बनाया गया था।
- ✓ यह स्नानागार किले में स्थित था और इसका उपयोग लोगों द्वारा धार्मिक स्नान के लिए किया जाता था।

**e) विशाल अन्नागार**

- ✓ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में खोजी गई यह आयताकार संरचना किले में एक ऊँचे चबूतरे पर बनाई गई थी, ताकि इसे पानी से सुरक्षित रखा जा सके। इसका उपयोग अनाज भंडारण के लिए किया जाता था और यह इस क्षेत्र की सबसे बड़ी इमारत थी, जिसकी लंबाई 150 फीट और चौड़ाई 50 फीट थी।

**नोट: हड़प्पा में अन्नागार -** कुल 12 (प्रत्येक पंक्ति में 6)

**f) जल निकासी प्रणाली**

- ✓ एक सुविकसित जल निकासी प्रणाली थी, जिसमें जिप्सम मोर्टार से लेपित मुख्य होल बने हुए थे।
- ✓ पानी के संरक्षण के लिए किले के दक्षिण में जलाशयों का निर्माण किया गया था। (धोलावीरा में 16 छोटे और बड़े जलाशय खोजे गए हैं।)

**2. कृषि**

- ➢ सिंधु घाटी सभ्यता में कृषि के प्रमाणों में गेहूं, जौ, मटर, सरसों, तिल, कपास और राई शामिल हैं।
- ➢ हल के टेराकोटा नमूने चोलिस्तान और बनावली (हरियाणा) में खोजे गए हैं, जबकि जुते हुए खेत के अवशेष कालीबंगा (राजस्थान) में पाए गए हैं।
- ➢ इसके अतिरिक्त, बलूचिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में पानी संग्रहित करने के लिए "गोबर बांध/नाला" का निर्माण किया गया था।
- ➢ शोर्तुगई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य भी मिले हैं। यह सभ्यता कपास उत्पादन करने वाली पहली सभ्यता थी, जिसे "सिंदोन" कहा जाता था, और यहाँ कताई चर्खे के प्रमाण भी मिले हैं।

**3. पालतू जानवर:**

- ➢ भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, बैल जैसे पालतू जानवरों के साक्ष्य मिले है
  - ✓ उनके द्वारा गाय नहीं पाली जाती थी
- ➢ सामान ढोने के लिए गधे और ऊँट जैसे पालतू जानवरों का उपयोग किया जाता था
- ➢ घोड़े के साक्ष्य: सुरकोटदा (केवल एक हड्डी मिली )
- ➢ उन्हें हाथियों के बारे में ज्ञान था (मुहरों पर अंकन के साक्ष्य )

**4. मुहरें**

- मुहरें चित्रात्मक और ज्यामितीय आकार (वर्ग, आयताकार और गोल) की वस्तुएँ थीं, जिन्हें मुख्य रूप से मुलायम नदीय पत्थर सेलखड़ी से निर्मित थी ।
- मुहरें का उपयोग व्यापार, ताबीज, शिक्षा जैसे कई उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
- एक महत्वपूर्ण उदाहरण 'पशुपति मोहर' है, जिसमें एक देवता को कई जानवरों के साथ दर्शाया गया है।

  मुहरों पर दर्शाए गए जानवर: भैंस, हाथी, बाघ, हिरण, और एक सींग वाला गेंडा।

**5. उपकरणऔर शिल्प**

- यहाँ से कांस्य और तांबे के औजार मिले
- सिन्धु घटी सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था
- प्रमुख व्यवसाय: वस्त्र निर्माण, ईंट बिछाना, नाव बनाना, मनके/गहने बनाना
- जेडाइट पत्थर: दाओजली हेडिंग (असम) से मिला है
- यहाँ कर्नाटक से खरीदे गए सोने के आभूषण भी मिले है
- वे मिट्टी के बर्तन बनाना जानते थे क्योंकि यहाँ से कुम्हार का चाक मिला है (लाल और काले बर्तन अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुए है )।

**6. व्यापार**

- अन्य सभ्यताओं में मिली सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरें यह दर्शाती हैं कि सभ्यताओं के बीच व्यापारिक संबंध स्थापित थे। मेसोपोटामिया (इराक), अफगानिस्तान, सुमेर (बगदाद), दिलमुन (बहरीन) और मगन (ओमान) के साथ व्यापारिक संबंधों के प्रमाण मिले हैं।
- बाट और माप के साक्ष्य इस बात का संकेत देते हैं कि व्यापार में मानकीकरण था।
- व्यापार में मुद्रा का उपयोग नहीं किया जाता था; यहाँ वस्तु - विनिमय प्रणाली प्रचलित थी।
- अफगानिस्तान में स्थित शोर्तुगई सिंधु घाटी सभ्यता का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था।
- प्रमुख व्यापारिक वस्तुएँ: धातु (सोना, चांदी, कांसा आदि), रत्न (लाजवर्द, फिरोजा, कार्नेलियन आदि), टेराकोटा के बर्तन, सीप, हाथीदांत, कपास (विदेशियों द्वारा 'सिंदोन' कहा गया) आदि।

**7. पूजा-अर्चना:**

- लिंग/शिवलिंग(Phallus ): पुरुष योनि/जननांग अंग
- पुरुष देवता पशुपति को मुहरों पर योग मुद्रा में बैठे हुए दर्शाया गया था।
- टेराकोटा मूर्तियों में मातृ देवी का चित्रण
- यहाँ वृक्षों और पशुओं की पूजा की जाती थी

**8. लिपि**

- चित्रात्मक लिपि थीजिसे बॉस्ट्रोफेदों के नाम से भी जाना जाता था
- यह दाएं से बाएं फिर बाएं से दाएं फिर दाएं से बाएं लिखी गई है
- **सिंधु घाटी सभ्यता** की लिपि अभी तक पढ़ी नहीं गई है।

**9. मूर्तियाँ**

- त्रिभंगा मुद्रा में नृत्य करती हुई लड़की की कांस्य मूर्ति
- सेलखड़ी से बनी दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति

  (दोनों मोहनजादड़ो से प्राप्त हुई है)

**10. अंत्येष्टि (दफ़नाने) के प्रकार**

- दोहरी अंत्येष्टि/मिट्टी के बर्तनों में अंत्येष्टि → लोथल
- पूर्ण अंत्येष्टि और दाह-संस्कार के बाद की अंत्येष्टि: मोहनजोदड़ो
- लकड़ी के ताबूत में अंत्येष्टि: हड़प्पा
- विस्तारित अंत्येष्टि → सोनौली, उत्तर प्रदेश

## सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण

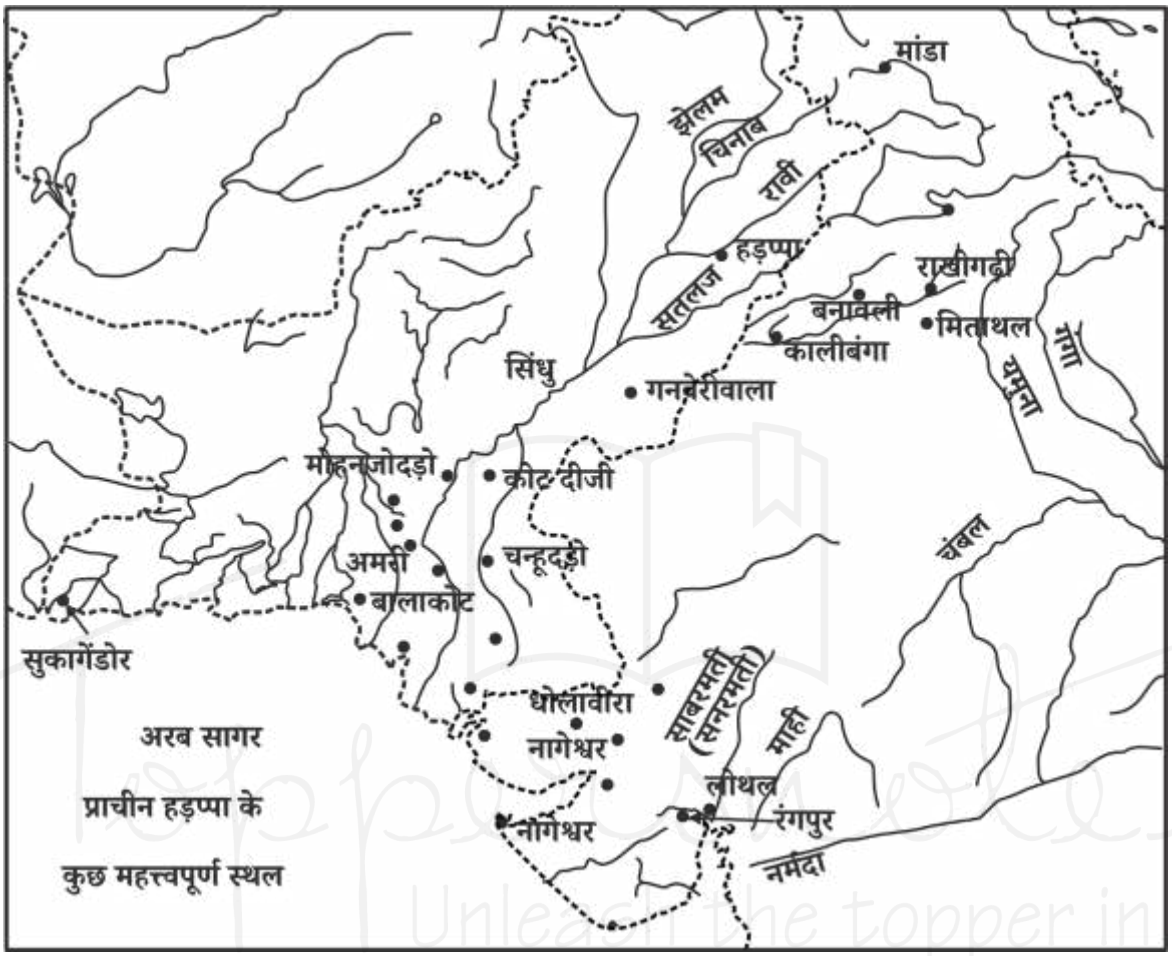


| स्थल/वर्ष | स्थान/नदी/खोजकर्ता | विशेषताएँ |
|---|---|---|
| 1. हड़प्पा (1921) | स्थान: पंजाब,पाकिस्तान<br>नदी: रावी<br>खोजकर्ता: दयाराम साहिनी | प्रत्येक पंक्ति में 6 अन्नागार ( 2 पंक्तियों में कुल 12 अन्नागार ) **लाल बलुआ पत्थर की पुरुष मूर्ति,** लिंगम, योनि और मातृ देवी की टेराकोटा मूर्तियाँ |
| 2. चन्हुदड़ो | स्थान: सिंध, पाकिस्तान<br>नदी: सिंधु<br>खोजकर्ता:गोपाल मजूमदार | एकमात्र नगर जहां किला नहीं है, यहाँ से मनका(मोती) बनाने के कारखाने, शंख-काटने का कार्य, धातु निर्माण, मुहर और बाट निर्माण; कुत्ते के पंजे का ईंट पर चिन्ह; टेराकोटा की बैलगाड़ी की आकृति; कांस्य की खिलौना गाड़ी आदि के साक्ष्य मिले है |
| 3. मोहनजोदड़ो | स्थान: सिंध, पाकिस्तान<br>नदी: सिंधु<br>खोजकर्ता: आर. डी. बनर्जी | 'मृतकों का टीला' के नाम से जाना जाता है, **पशुपति और मातृ देवी की मुद्राएं**; किला **और निचला नगर**, विशाल स्नानागार और विशाल अन्नागार। मातृ देवी की मिट्टी की मूर्ति, नृत्य करती लड़की की कांस्य मूर्ति **और भैंस** , दाढ़ी वाले व्यक्ति की मूर्ति |

| | | |
|---|---|---|
| 4. लोथल | स्थान: गुजरात<br>नदी: भोगवा<br>खोजकर्ता: एस.आर. राव | प्राचीन बंदरगाह, गोदीवाड़ा (जहाज़ बनाने का स्थान), टेराकोटा जहाज, अग्नि वेदी, संयुक्त अंत्येष्टि, शतरंज, मनका कारखाना |
| 5. बालाथल और कालीबंगा | स्थान: राजस्थान<br>नदी: घग्गर<br>खोजकर्ता: ए. घोष | 7 अग्नि वेदिकाएँ मिलीं, काली चूड़ियाँ, जुते हुए खेत **के साक्ष्य**, ऊँट की हड्डियाँ**कांस्य बैल की आकृति।** |
| 6. सुरकोताडा | स्थान: गुजरात<br>खोजकर्ता: जगपति जोशी | घोड़े की हड्डियों के प्रथम वास्तविक अवशेष**, अंडाकार कब्रें**; **मिट्टी के कलश में दफनाने के साक्ष्य।** |
| 7. सुत्कागेंडोर | स्थान: पाकिस्तान | तटीय शहर, सबसे पश्चिमी स्थल |
| 8. धोलावीरा | स्थान: गुजरात<br>खोजकर्ता: जगपति जोशी<br>खुदाई शुरू : आर.एस.बिष्ट | **यहाँ** विशाल जलाशय **, तीन भागों (गढ़**, **मध्य नगर**, **निचला नगर) में किला-बंद व्यवस्था** ;<br>2021 में इसे विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल गया (भारत में 40वाँ) |
| 9. राखीगढ़ी | स्थान: हरियाणा<br>नदी: घग्गर<br>खोजकर्ता: अमरेंद्र नाथ | भारत का सबसे बड़ा स्थल, टेराकोटा से निर्मित पहिये और खिलौने **तीनों हड़प्पा कालों के साक्ष्य प्राप्त हुए है।** |
| 10. भिराणा | हरियाणा | सबसे पुराना सिन्धु घाटी सभ्यता स्थल |
| 11. बनावली | स्थान: हरियाणा<br>नदी: घग्गर<br>खोजकर्ता: आर.एस.बिष्ट | ग्रिड पैटर्न का अभाव, सूखी सरस्वती नदी |
| 12. रोपड़ | स्थान: पंजाब, भारत<br>नदी: सतलुज | कुत्ते के साथ अंत्येष्टि, अंडाकार अंत्येष्टि गड्ढे, यह स्वतंत्र भारत का पहला हड़प्पा स्थल है**, तांबे की कुल्हाड़ी।** |
| 13. आलमगीरपुर | स्थान: मेरठ, उत्तर प्रदेश<br>नदी: यमुना | सबसे पूर्वी स्थल**, उत्तर-हड़प्पा काल**; **टूटी हुई तांबे की ब्लेड**; **नांद पर कपड़े की छाप।** |
| 14. मेहरगढ़ | स्थान: पाकिस्तान | मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार |
| 15. कोट दीजी | स्थान: पाकिस्तान | **टार**, बैल और मातृ देवी की मूर्तियाँ |
| 16. बालू | स्थान: हरियाणा | **विभिन्न पौधों के सर्वप्रथम अवशेष**<br>लहसुन के साक्ष्य)। |
| 17. दैमाबाद | स्थान: महाराष्ट्र | सबसे दक्षिणी स्थल, कांस्य रथ |
| 18. केरल-नो-धोरो | स्थान: गुजरात | नमक उत्पादन केंद्र |
| 19. मांडा | स्थान: जम्मू और कश्मीर | सबसे उत्तरी स्थल |

# 2 CHAPTER वैदिक काल

**विगत वर्षों के प्रश्न**

प्रश्न1. सत्यकाम जाबाल की कथा, जो अविवाहित माँ होने के कलंक को चुनौती देती है, का उल्लेख किया गया है। **(2016)**

(1) छान्दोग्य उपनिषद (2) जाबाल उपनिषद

(3) कठोपनिषद (4) प्रश्नोपनिषद

**विश्लेषण -** हाल के वर्षों में RPSC द्वारा इस अध्याय से कोई प्रश्न नहीं पूछे गए हैं; फिर भी, यह प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है जिससे आगामी परीक्षाओं में प्रश्न पूछे जाने की प्रबल संभावना है। इसलिए, इसे पर्याप्त और प्रासंगिक विवरण के साथ शामिल किया गया है।

घुमंतू और देहाती आर्यों का मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन वैदिक काल की शुरुआत को दर्शाता है। वैदिक काल को दो युगों में विभाजित किया जा सकता है -

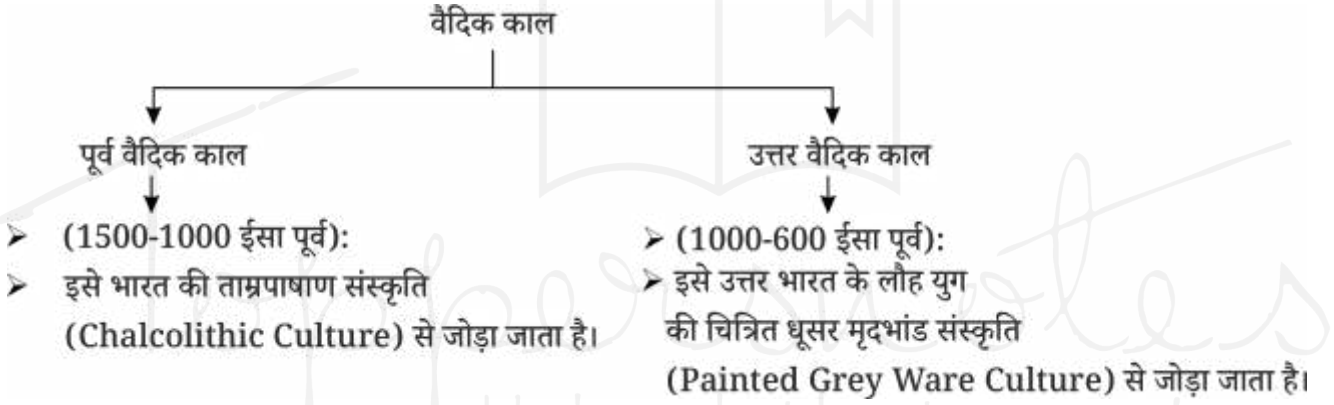


## पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- भारत में आर्यों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत वैदिक साहित्य है, जो संस्कृत में लिखा गया है।
- ऋग्वेद में आर्यों और उनके प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र सप्त-सिंधव का उल्लेख मिलता है।
- सप्त-सिंधव क्षेत्र सात नदियों का क्षेत्र था, जिनके नाम निम्नलिखित हैं:
  1. सिंधु
  2. वितस्ता (झेलम)
  3. अस्किनी (चिनाब)
  4. परुष्णी (रावी)
  5. विपाशा (ब्यास)
  6. शतुद्रि (सतलज)
  7. सरस्वती (नदितमा / हर्कावती)
- ऋग्वेद के नंदी सूक्त में पूर्व में गंगा नदी और पश्चिम में कुंभा (काबुल नदी) का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेदिक ऋचाएं उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रतिबिंबित करती हैं।
- इसमें आर्यों और दास या दस्यु (गैर-आर्य) के बीच संघर्ष का वर्णन है।
- साथ ही, यह भरत कुल के दिवोदास द्वारा एक प्रमुख दस्यु सरदार शंबर की पराजय का उल्लेख करता है।

**ऋग्वेद**

- यह चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद) में से एक है।
- यह इंडो-यूरोपीय भाषा का सबसे प्राचीन उदाहरण है।
- इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण और अन्य देवताओं को अर्पित प्रार्थनाओं का संग्रह है।
- इसमें 1028 मंत्र हैं, जो 10 मंडलों (पुस्तकों) में विभाजित हैं:
  - ✓ द्वितीय से सप्तम मंडल सबसे पहले रचित हुए थे।
  - ✓ प्रथम और दशम मंडल सबसे अंत में रचित हुए।

## प्रारंभिक वैदिक काल का भौगोलिक विस्तार

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रारंभिक आर्य पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करते थे।

**जेंद अवेस्ता**

- जेंड अवेस्ता पारसी धर्म (जोरोआस्ट्रियन धर्म) का एक प्रमुख पर्शियन/ईरानी ग्रंथ है।
- यह ग्रंथ इंडो-ईरानी भाषाएं बोलने वाले लोगों की भूमि और उनके देवताओं का उल्लेख करता है।
- इसमें भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों का संदर्भ मिलता है।
- इसमें कुछ शब्द ऐसे हैं जो वैदिक ग्रंथों के शब्दों से भाषाई समानता दर्शाते हैं।
- यह ग्रंथ एक अप्रत्यक्ष साक्ष्य प्रदान करता है कि आर्यों का प्रारंभिक निवास स्थान भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर था।

## पूर्व वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

- इस काल का समाज कुल (परिवार), विस (कुल) और ग्राम (समुदाय) के आधार पर संगठित था।
- 'कुल' समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई होती थी, और कुल का मुखिया 'कुलप' कहलाता था।
- चातुर्वर्ण्य व्यवस्था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
  - ✓ इसका निर्धारण कर्म के आधार पर होता था और वर्णों के मध्य गतिशीलता मौजूद थी।
- महिलाओं को आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए पुरुषों के समान अवसर प्राप्त थे।
- महिला विद्वान: अपाला, विश्ववारा, घोषा और लोपामुद्रा।
- बाल विवाह की प्रथा मौजूद नहीं थी।
- विधवा पुनर्विवाह: नियोग प्रथा।
- प्रेम विवाह होते थे, जिसे गंधर्व विवाह कहा जाता था।
- समाज पितृसत्तात्मक था।
- दास प्रथा मौजूद थी।
  - ✓ दास दो प्रकार के होते थे: दास (पराजित आर्य) और दस्यु (अनार्य)।

## पूर्व वैदिक काल की अर्थव्यवस्था

- मुख्य व्यवसाय पशुपालन था, ऋग्वेद में गायों से संबंधित वर्णित कई शब्दों का उल्लेख होता है जैसे:
  - ✓ गोपा – गाय
  - ✓ गोपजन्य – गाय का स्वामी
  - ✓ दूत्री – गाय दुहने वाला
  - ✓ गोधूम – गेहूं
  - ✓ गोधूलि – संध्या
  - ✓ गविष्ठी – गायों की खोज
- तांबे और कांसे से निर्मित उपकरण भी अर्थव्यवस्था का हिस्सा थे।
- "निष्क" नामक सोने के सिक्के प्रचलित थे।
- करों की कोई औपचारिक प्रणाली नहीं थी, लेकिन 'बलि' नामक कर स्वेच्छा से कबीले के मुखिया को अर्पित किया जाता था।

## पूर्व वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

- राजनीतिक व्यवस्था में भूमि की अवधारणा का विकास नहीं हुआ था, बल्कि यह कबीलों के आधार पर निर्धारित थी। इन कबीलों को 'जन' कहा जाता था और आर्य कबीलों का मुखिया "राजन" कहलाता था।
- राजन की सहायता के लिए सभा, समिति और विदथ नामक जनप्रतिनिधि संस्थाएं होती थी।

| | |
|---|---|
| 1. सभा | कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों (जन के वरिष्ठ सदस्य) का समुदाय, जिसमें महिलाएं भी शामिल थीं। |
| 2. समिति | यह राजन का चुनाव करने वाले सामान्य लोगों का समूह था।<br>इसमें केवल पुरुष ही हिस्सा लेते थे। |
| 3. विदथ | इसका निर्माण धार्मिक उद्देश्य और धर्म से संबंधित निर्णय लेने के लिए किया जाता था ।<br>इसमें पुरुष और महिला दोनों भाग लेते थे। |

- **अधिकारियों का पदानुक्रम**
  - ✓ पुरोहित: राजा के मुख्य सलाहकार
  - ✓ सेनानी: सेना प्रमुख
  - ✓ ग्रामणी: गाँव का मुखिया

## पूर्व वैदिक काल का धर्म

- इस **काल** के लोग प्रकृति उपासक थे – पृथ्वी (पृथ्वी), इंद्र, अग्नि (अग्नि), वायु (हवा), अदिति (देवी), वरुण (वर्षा), सावित्री (गायत्री मंत्र समर्पित)।

## मृद्भांड: गेरू रंग के मिट्टी के बर्तन।

**वेद**

- भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन के बाद आर्यों ने संस्कृत भाषा में वेदों की रचना की शुरूआत की।
- सर्वप्रथम ऋग्वेद की रचना की गई, जो आर्यों के सम्बन्ध में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।
- वेदों का ज्ञान मौखिक रूप से (श्रुति) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया जाता था।
- वेदों को "अपौरुषेय" कहा जाता है, मान्यता है कि वेद मनुष्य द्वारा नहीं, बल्कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं। कुल 4 वेद हैं और प्रत्येक के 4 उप-वर्गीकरण हैं।

**वेदों का वर्गीकरण**

| ऋग्वेद | सामवेद | यजुर्वेद | अथर्ववेद |
|---|---|---|---|
| ➢ यह सबसे प्राचीन वेद है।<br>➢ इसमें सप्तसैन्धव या सात नदियों के प्रदेश का उल्लेख किया गया है।<br>➢ इसकी रचना पूर्व वैदिक काल में की गई।<br>➢ इसमें 1028 सूक्त हैं, जिन्हें 10 मंडलों में व्यवस्थित किया गया है – इनमें यज्ञ के लिए उपयोग होने वाले मंत्र शामिल हैं। | ➢ सामवेद को "संगीत का जन्मदाता" या "मंत्रों का ग्रंथ" भी कहा जाता है।<br>➢ इसमें संगीत और गायन पर विशेष ध्यान दिया गया है।<br>➢ पाठकर्ता- उद्गाता<br>➢ कुल मंत्र: 1875 (75 मूल मंत्र और शेष ऋग्वेद के शाकल शाखा से लिए गए हैं)। | ➢ इसमें अनुष्ठानों और मंत्रों का संग्रह है।<br>➢ इसकी दो प्रमुख शाखाएं हैं - शुक्ल और कृष्ण।<br>➢ इन संहिताओं को क्रमशः वाजसनेयी संहिता और तैत्तिरीय संहिता भी कहा जाता है।<br>➢ **पाठकर्ता**- अध्वर्यु | ➢ इसे "ब्रह्म वेद" के नाम से भी जाना जाता है।<br>➢ यह दो ऋषियों, अथर्वा और अंगिरस, से संबंधित है; इसलिए इस वेद को अथर्वांगिरस भी कहा जाता है।<br>➢ यह जादू-टोना और तांत्रिक सूत्रों का वेद है।<br>➢ इसमें मुख्यतः कई बीमारियों के उपचार से सम्बंधित मन्त्रों का वर्णन है। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ➢ इन मंत्रों का पाठ "होतृ" द्वारा किया जाता था।<br>➢ यह भौतिक समृद्धि और प्राकृतिक सुंदरता पर आधारित है।<br>➢ **देवता:** इंद्र (प्रमुख देवता), अग्नि, वरुण, रुद्र, आदित्य, वायु, अश्विनी कुमार।<br>➢ **देवियाँ:** उषा, पृथ्वी, वाक।<br>➢ **उपनिषद**<br>1. ऐतरेय<br>2. कौषीतकी | ➢ उपनिषद<br>1. छांदोग्य उपनिषद<br>2. केन उपनिषद | ➢ **उपनिषद**<br>**1.** बृहदारण्यक उपनिषद<br>2. कठोपनिषद | ➢ इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं - पैप्पलाद और शौनक।<br>➢ **पाठकर्ता**- ब्रम्हा<br>➢ **उपनिषद**<br>1. **माण्डूक्य उपनिषद:** इसमें "सत्यमेव जयते" का उल्लेख किया गया है।<br>2. **महा उपनिषद:** इसमें "वसुधैव कुटुंबकम्" का उल्लेख किया गया है। |

**नोट:** ऋग्वेद के मंडल

- गायत्री मंत्र: ऋषि विश्वामित्र द्वारा रचित (तीसरे मंडल में उल्लेख)।
- दूसरे से लेकर सातवें मंडल की रचना सबसे पहले की गयी थी।
- दसवां मंडल: इसमें पुरुष सूक्त का उल्लेख है, जो ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में बताता है, जिसमें ब्रह्मा के शरीर के विभिन्न अंगों से चार वर्ण (चातुर्वर्ण्य) उत्पन्न हुए —
  - ✓ मुख से ब्राह्मण
  - ✓ भुजाओं से क्षत्रिय
  - ✓ जांघों से वैश्य
  - ✓ पैरों से शूद्र
- नौवां मंडल: इसमें सोम देवता का उल्लेख है।

**ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक जानकारी**

a. हिमवंत पर्वत (हिमालय)
b. मुंजवत पर्वत (हिंदूकुश)
c. सप्त सैन्धव प्रदेश (सात नदियाँ) - वैदिक आर्यों का निवास स्थान

**वेदों के उपविभाजन**

**1. संहिता**

- ✓ ये वेदों के मुख्य अंग है जिसमें वैदिक मंत्रों और प्रार्थनाओं का संग्रह है जो विभिन्न अनुष्ठानों से सम्बंधित हैं।

**2. ब्राह्मण**

- ✓ ये श्रुति साहित्य का हिस्सा (प्रकट ज्ञान) है।
- ✓ रचना काल: 900-700 ई.पू.।
- ✓ प्रत्येक वेद के साथ एक ब्राह्मण ग्रंथ संलग्न है, जो वेदों पर टीकाओं का संग्रह है:
  - **ऋग्वेद**: ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकी ब्राह्मण
  - **सामवेद:** तांड्य महाब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण
  - **यजुर्वेद:** तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण
  - **अथर्ववेद:** गोपथ ब्राह्मण
- ✓ इसमें कथाओं, तथ्यों, नैतिक आख्यानों और वैदिक अनुष्ठानों की विस्तृत व्याख्याएँ की गयी हैं।
- ✓ इसमें अनुष्ठान करने के निर्देश और इन अनुष्ठानों में प्रयुक्त पवित्र शब्दों के प्रतीकात्मक महत्व की व्याख्या भी शामिल है।

**3. आरण्यक**

- ✓ आरण्यक ग्रंथ को प्रत्येक वेद के साथ शामिल किया गया है, जो वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के पीछे के दर्शन का वर्णन करते हैं।
- ✓ यह जीवन के चक्र (जन्म और मृत्यु) और आत्मा पर केंद्रित हैं।
- ✓ इन्हें वनवासी मुनियों (पवित्र और विद्वान व्यक्ति) द्वारा सिखाया जाता था।

**4. उपनिषद**

- ✓ वैदिक साहित्य के विकास के अन्तिम चरण में उपनिषद्-ग्रन्थ आते हैं। इसलिए इन्हें "वेदांत" भी कहा जाता है।
- ✓ उपनिषदों में गुरु-शिष्य के संवादों के रूप में बहुत गूढ़ बातें कही गई हैं।
- ✓ इनकी विवेचनाओं में आत्मा, ब्रह्म तथा संसार के रहस्यों को उल्लेखित किया गया है।
- ✓ ये मानव जीवन, मोक्ष (मुक्ति) का मार्ग, ब्रह्मांड और मानव जाति की उत्पत्ति, जीवन-मृत्यु चक्र और मानव के भौतिक व आध्यात्मिक खोजों पर विश्लेषण करते हैं।
- ✓ कुल 200 ज्ञात उपनिषद हैं; इनमें से 108 को "मुक्तिका कानन" कहा गया है।

**नोट: सत्यकाम जाबाला**

एक वैदिक ऋषि, गौतम ऋषि के अनुयायी, जो छांदोग्य उपनिषद के अध्याय IV में वर्णित हैं। उन्होंने अविवाहित माँ होने के कलंक को चुनौती दी।

## उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

- ➢ 1000 ई. पू. में लोहे के प्रयोग से उत्तर वैदिक काल की शुरुआत मानी जाती है।
- ➢ इस काल में लोहे के उपकरणों की सहायता से वनों को साफ किया गया और अन्य क्षेत्रों में विस्तार सुनिश्चित किया गया।
- ➢ शतपथ ब्राह्मण में आर्यों के पूर्वी गंगा के मैदानी क्षेत्र में विस्तार का उल्लेख है।
- ➢ इस काल में अन्य 3 वेदों (साम, अथर्व और यजुर्वेद) की रचना की गयी।
- ➢ उत्तर वैदिक कालीन ग्रंथों में गंगा, यमुना, गंडक और सदानीरा नदियों का उल्लेख है।
- ➢ कुरु जनजाति उत्तर वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण जनजाति थी। इसमें दो कुल शामिल थे - पांडव और कौरव।
  - ✓ परीक्षित और जन्मेजय इसके प्रसिद्ध शासक थे।

**नोट:** महाभारत (950 ई.पू.) का संकलन चौथी शताब्दी (400 ई.) में हुआ।

### उत्तर वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था

- ➢ इस काल में भूमि प्रमुख आर्थिक संपत्ति बन गयी, किन्तु करों की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी।
- ➢ मुख्य व्यवसाय- कृषि
  - ✓ जौ, चावल और गेहूं की फसलों की खेती होती थी।
- ➢ निष्क के अलावा, शतमान और कृष्णल जैसे सोने और चांदी के सिक्केप्रयोग में लाये जाते थे
  - ✓ इस काल में बेबीलोन जैसे देशों के साथ व्यापार होता था।
- ➢ इस काल में धातुकर्म , चमडे का कार्य , बढ़ईगीरी और मिट्टी के बर्तन निर्माण में काफी प्रगति हुई।
- ➢ लकड़ी का हल (रुरा) का उपयोग किया जाता था।

## उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

- इस काल में राजन सबसे महत्वपूर्ण पद था।
- राजन की सहायता और सलाह के लिए पुरोहित वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
  - ✓ राजन की सर्वोच्चता को निर्धारित करने के लिए इसे विभिन्न अनुष्ठानिक यज्ञों से जोड़ दिया गया, **जैसे:**
    - **राजसूय** (राज्याभिषेक समारोह, जिसमें पुरोहित वर्ग के आशीर्वाद से राजन को सिंहासन प्राप्त होता है)
    - **अश्वमेध** (राज्य विस्तार से संबंधित)
    - **वाजपेय** (रथ दौड़)
- राजन की उपाधियाँ: राजविश्वजन, अहिलभुवनपति, एकराट और सम्राट।
- महत्वपूर्ण **अधिकारी-**
  - ✓ **पुरोहित**: मुख्य सलाहकार
  - ✓ **सेनानी**: सेना प्रमुख
  - ✓ **ग्रामणी**: गाँव का मुखिया
- जनप्रतिनिधि संस्थाओं में परिवर्तन
  - ✓ सभा: महिलाओं को इसमें प्रवेश की अनुमति नहीं थी।
  - ✓ समिति: इसका महत्व कम हो गया।
  - ✓ विदथ: इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

## उत्तर वैदिक कालीन समाज

- इस काल में वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई और गोत्र प्रणाली मजबूत हो गई। अतः विभिन्न वर्णों के मध्य गतिशीलता कम हो गई।
- इस काल में चार आश्रमों की संकल्पना दी गयी:
  - ✓ **ब्रह्मचर्य** (अध्ययन काल)
  - ✓ **गृहस्थ** (विवाहित जीवन)
  - ✓ **वानप्रस्थ** (घर से आंशिक संन्यास, ज्ञान प्राप्ति के लिए)
  - ✓ **संन्यास** (पूर्ण संन्यास, आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए)
- **धर्म**
  - ✓ प्रजापति (सृष्टिकर्ता) सबसे महत्वपूर्ण देवता थे ।
  - ✓ अन्य महत्वपूर्ण देवता- विष्णु (संरक्षक) और रुद्र (विनाशक) ।
- **मृद्भांड**: **धूसर** - रंग के मिट्टी के बर्तन।

Toppersnotes Unleash the topper in you

# 3 CHAPTER आजीविक, जैन धर्म और बौद्ध धर्म

**पिछले वर्ष के प्रश्न**

Q1. स्तूपों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए एवं निम्नांकित में से सही विकल्प चुनिए? (2024)

A: 'स्तूप' शब्द एक वास्तुशिल्प शब्द है और इसका अर्थ है वह चीज जो कि संचय के माध्यम से बनाई हो ।

B. मृतकों की स्मृति में 'स्तूप' बनाने की प्रथा बौद्धकाल से पूर्व की थी।

(1) केवल A सत्य है। (2) केवल B सत्य है।

(3) A और B दोनों सत्य हैं। (4) A और B दोनों असत्य हैं।

Q2. निम्न में से किन बौद्ध ग्रन्थों की रचना संस्कृत भाषा में की गई? निम्नांकित में से सही विकल्प चुनिए : (2024)

A. दिव्यावदान B. दीपवंश

C. महावंश D. आर्यमंजूश्री मूलकल्प

(1) A, B (2) B, C

(3) A, D (4) A, C

Q3. आजीवक सम्प्रदाय के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2024)

A. नियतिवाद में विश्वास

B. उनके पुनर्जन्म के क्रम में बदलाव किया जा सकता है।

C. कठोर तपस्या में विश्वास

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(1) केवल A सही हैं। (2) केवल B सही है ।

(3) A और B सही हैं । (4) A और C सही हैं।

**Q4.** निम्नलिखित में से कौन कौन से सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित हैं? (2021)

(i) अनेकान्तवाद (ii) सर्वस्तिवाद

(iii) शून्यवाद (iv) स्यादवाद

नीचे दिये गये कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए -

(1) (i) एवं (iv) (2) (ii) एवं (iv)

(3) (i), (ii) एवं (iii) (4) (ii) एवं (iii)

**Q5.** सूची - I एवं सूची -II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट में से सही उत्तर चुनिए - (2021)

| सूची-I (तीर्थंकर) | सूची –II (उनके संज्ञान) |
|---|---|
| (A) पार्श्वनाथ | (i) वृषभ |
| (B) आदिनाथ | (ii) सिंह |
| (C) महावीर | (iii) सर्प |
| (D) शांतिनाथ | (iv) हिरण |

कूट -

(1) A (ii), B- (iii), C-(iv), D-(i) (2) A- (iv), B- (iii), C- (ii), D- (i)

(3) A- (i), B- (ii), C- (iii), D- (iv) (4) A-(iii), B-(i), C- (ii), D- (iv)

**विश्लेषण** – जैन धर्म और बौद्ध धर्म प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण विषय हैं। भले ही इन विषयों पर विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs) अपेक्षाकृत सरल रहे हों, फिर भी इस अध्याय के प्रत्येक महत्वपूर्ण पहलू को शामिल करना और याद रखना आवश्यक है। विशेष रूप से **बुद्ध** और **महावीर** से संबंधित विवरण, साथ ही जैन और बौद्ध धर्म के साहित्य और प्रमुख सिद्धांतों को समझना बेहद जरूरी है। इन सभी पहलुओं को परीक्षा के दृष्टिकोण से पूरी गहराई और प्रासंगिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व की अवधि भारत में नए धर्मों जैसे जैन धर्म और बौद्ध धर्म के उदय के लिए जाना जाता है। इस दौर में कृषि सुधार, व्यापार का विकास, मुद्रा का चलन और शहरीकरण की प्रक्रिया ने समाज में असमानता और सामाजिक संघर्षों को बढ़ा दिया था । हिंसा, क्रूरता, चोरी, द्वेष और झूठ जैसे नई सामाजिक समस्याएं सामने आईं। इन समस्याओं के चलते लोगों ने शांति और सामाजिक समानता का संदेश देने वाले नए धर्मों, जैसे जैन धर्म और बौद्ध धर्म का स्वागत किया। वैश्य और अन्य व्यापारी वर्ग भी समाज में बेहतर स्थान चाहते थे, इसलिए उन्होंने भी बौद्ध धर्म और जैन धर्म को संरक्षण दिया।

## जैन धर्म –

- जैन दर्शन को सबसे पहले, तीर्थंकर ऋषभ देव (पहले तीर्थंकर, जिन्हें आदिनाथ के नाम से भी जाना जाता है) द्वारा प्रतिपादित किया गया था। 24वें और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर ने जैन धर्म को मुख्य रूप से प्रोत्साहित किया ।
- सम्मेद शिखरजी (झारखंड में) 20 तीर्थंकरों का निर्वाण स्थल है।
- ऋषभनाथ का निर्वाण स्थल कैलाश पर्वत पर है, जिसे जैन धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में पवित्र माना जाता है।
- नेमिनाथ का निर्वाण स्थल गुजरात के गिरनार पर्वत पर हैं।
- वर्धमान महावीर के अनुयायियों को 'जैन' कहा जाता है।
  - ✓ "जैन" शब्द "जिन" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'विजेता' (आत्मा का विजेता)।
  - ✓ भद्रबाहु द्वारा रचित 'कल्पसूत्र' में 24 तीर्थंकरों का उल्लेख है।

### प्रमुख तीर्थंकर –

| नाम | जन्म स्थान | प्रतीक चिन्ह |
|---|---|---|
| 1. ऋषभ देव/आदिनाथ (प्रथम) | अयोध्या | बैल |
| 2. अजीतनाथ | अयोध्या | हाथी |
| 3. सम्भवनाथ | | घोड़ा |
| 4. अभिनंदननाथ | | बंदर |
| 5. सुमतिनाथ | | बगुला |
| 6. पद्मप्रभ | | लाल कमल |
| 7. सुपार्श्वनाथ | | स्वस्तिक |
| 8. चंद्रप्रभु | | चंद्रमा |
| 9. सुविधिनाथ / पुष्पदंत | | मगरमच्छ |
| 10. श्रेयांसनाथ | | स्वस्तिक |
| 11. वासुपूज्य | | भैंस |
| 12. विमलनाथ | | बाज / शिकरा |
| 13. धर्मनाथ | | वज्र (बिजली) |
| 14. शांतिनाथ | | हिरण |
| 15. कुंथुनाथ | | बकरी |
| 16. अरनाथ | | नंद्यावर्त (अनुमानित) |

| | | |
|---|---|---|
| 17. मल्लिनाथ | | घट / कलश (श्वेतांबर में स्त्री मानी जाती हैं) |
| 18. नेमिनाथ / अरिष्टनेमि | | कछुआ (प्रतीक नहीं दर्शाया गया) |
| 22. नेमिनाथ/अरिष्टनेमि | सौरिपुर | शंख |
| 23. पार्श्वनाथ | वाराणसी | नाग (सर्प) |
| 24. वर्धमान महावीर (अंतिम) | वैशाली (बिहार) | शेर (सिंह) |

**नोट:** यजुर्वेद में तीन तीर्थंकरों ऋषभ देव, अजीतनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख है।

**वर्धमान महावीर –**

जैन धर्म को धर्म के रूप में स्थापित करने का श्रेय वर्धमान महावीर को जाता है।

- जन्म: 540 ई. पू. (लगभग), कुंडग्राम (वैशाली, बिहार),एक गण-संघ के शासक परिवार में हुआ था।।
  - ✓ पिता: सिद्धार्थ (कुल: ज्ञातृक क्षत्रिय);
  - ✓ माता: त्रिशला( लिच्छवी राजकुमारी और जो इसके प्रमुख चेतक की बहन थी)
  - ✓ पत्नी: यशोदा;
  - ✓ पुत्री: अनोज्जा प्रियदर्शना; इनका विवाह 'जामालि' (महावीर के प्रथम शिष्य) से हुआ।
- गृहत्याग- उन्होंने 30 वर्ष की उम्र में अपना घर छोड़ दिया और सच्चे ज्ञान की तलाश में 12 साल तक भटकते रहे। उन्होंने गंभीर तपस्या का अभ्यास किया और अपने कपड़ों को त्याग दिया।
- ज्ञान प्राप्ति: 42 वर्ष की आयु में जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान (कैवल्य) प्राप्त हुआ और इस कारण इन्हें 'केवलिन' कहा जाता है। कैवल्य नामक उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर और उन्होंने दुख और सुख पर विजय प्राप्त की।
- मृत्यु: 468 ई. पू., पावापुरी (72 वर्ष) (बिहारशरीफ, बिहार)।
- उन्होंने पावा (पटना के पास) में अपना उपदेश दिया और अपना पूरा जीवन अंग, मिथिला, मगध और कोसल में अपने दर्शन का प्रचार करने में बिताया

## जैन दर्शन -

- जैन धर्म का मानना है कि मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति है, जिसका अर्थ है जन्म और मृत्यु से मुक्ति। यह त्रिरत्न और पंचव्रत के अनुसरण से प्राप्त किया जा सकता है।
- मोक्ष/मुक्ति तीन सिद्धांतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिसे 'त्रिरत्न' कहा जाता है, ये हैं-
  1. सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)
  2. सम्यक दर्शन (सही विश्वास/आस्था)
  3. सम्यक चरित (सही आचरण)
- सम्यक आचरण का अर्थ है पाँच महान व्रतों (पंचमहाव्रत) का पालन करना :
- पंचमहाव्रत (अणुव्रत) -
  1. अहिंसा (हिंसा नहीं करना) ।
  2. सत्य (सच बोलना) ।
  3. अस्तेय (चोरी नहीं करना) ।
  4. ब्रह्मचर्य (संयमित जीवन जीना) - महावीर द्वारा जोड़ा गया।
  5. अपरिग्रह (भौतिक वस्तुओं से अलग रहना) ।

- जैन धर्म ने देवताओं के अस्तित्व को मान्यता दी लेकिन उन्हें जिन से निम्न स्थान दिया ।
- यह 'अनेकांतवाद' (यथार्थ जटिल है और इसके कई पहलू एवं दृष्टिकोण हो सकते हैं), 'स्यात्वाद' (सारा ज्ञान सापेक्ष और शर्तों पर आधारित होता है — जो केवल विशेष परिस्थितियों में ही सत्य होता है), और द्वैतवाद (आत्मा — जीव और पदार्थ — अजीव के बीच भेद को मानता है) की अवधारणाओं पर विश्वास करता है। जीव और अजीव का मिलन कर्म (क्रिया) को जन्म देता है, जो जन्म और पुनर्जन्म के अनंत चक्र का कारण बनता है।
- **ज्ञान के प्रकार:** जैन धर्म पाँच प्रमुख प्रकार के ज्ञान को मान्यता देता है:
- **मध्यस्थ ज्ञान:** मति (इंद्रियों पर आधारित ज्ञान), श्रुत (शास्त्रों का ज्ञान)
- **प्रत्यक्ष ज्ञान:** अवधि (दिव्य दृष्टि द्वारा ज्ञान), मन:पर्यय (मन को पढ़ने का ज्ञान), केवल्य (सर्वज्ञता — ज्ञान का सर्वोच्च रूप)

## जैन धर्म संगीति -

| जैन परिषद | स्थान | अध्यक्षता | विवरण |
|---|---|---|---|
| प्रथम जैन संगीति: 298 ई.पू. | पाटलिपुत्र | स्थूलभद्र (बिंदुसार द्वारा संरक्षित) | जैन धर्म की पवित्र शिक्षाओं को 12 अंगों में संकलित किया गया। (महावीर की पवित्र शिक्षाओं का वर्णन) |
| द्वितीय जैन संगीति: 512 ई. | वल्लभी, गुजरात | देवर्धि क्षमाश्रवण | 12 उपांग (लघु खंड) जोड़े गए। |

## जैन धर्म की शाखाएँ –

| पक्ष / पहलू | श्वेतांबर (श्वेत वस्त्रधारी) | दिगंबर (निर्वस्त्र) |
|---|---|---|
| **उत्पत्ति और नेता** | मगध में स्थूलभद्र के नेतृत्व में रहे | भद्रबाहु के नेतृत्व में अकाल के समय दक्षिण भारत चले गए |
| **वस्त्र पहनना** | साधारण सफेद वस्त्र पहनते हैं | वस्त्र नहीं पहनते; मुक्ति के लिए नग्नता को आवश्यक मानते हैं |
| **स्त्रियों की मुक्ति** | स्त्रियाँ मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं; मल्लिनाथ (19वें तीर्थंकर) स्त्री मानी जाती हैं | स्त्रियाँ मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकतीं; मल्लिनाथ को पुरुष माना जाता है |
| **पवित्र ग्रंथ** | मूल जैन आगमों (आंग और आंग-बाह्य) को मानते हैं | मूल आगमों की प्रमाणिकता नहीं मानते; आचार्य कुंदकुंद के ग्रंथों को मानते हैं |
| **प्रतिमा का स्वरूप** | तीर्थंकरों की प्रतिमाएं वस्त्रों, आभूषणों और नेत्रों सहित होती हैं | तीर्थंकरों की प्रतिमाएं नग्न, साधारण और आभूषण रहित होती हैं |
| **सर्वज्ञ के लिए आहार** | सर्वज्ञ (केवली) को आहार की आवश्यकता होती है | सर्वज्ञ (केवली) को आहार की आवश्यकता नहीं होती |
| **मुख्य उप-संप्रदाय** | मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी | बीसपंथी, तेरापंथी, तरणपंथी (समैयपंथी) |

**जैन साहित्य**

- **उन्होंने** अपने सिद्धांतों के प्रचार के लिए प्राकृत भाषा को अपनाया और अपने धार्मिक ग्रंथों की रचना जनसाधारण की भाषा अर्ध-मागधी में की।
- 12 **अंग**: आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, भगवती व्याख्या आदि।
- **तमिल** कृतियाँ: नालडियार, जीवक चिंतामणि, नीलकेसी।

**प्रमुख लेखक:**

- **भद्रबाहु**: कल्पसूत्र
- **विमलसूरी**: पउमचरियम (जैन रामायण)
- **उमास्वाती**: तत्त्वार्थ सूत्र
- **हेमचंद्र**: योगशास्त्र
- **समंतभद्र**: रत्नकरंड श्रावकाचार
- **पुष्पदंत**-भूतबली: षट्खंडागम
- **जिनसेन**: महापुराण

- **महत्वपूर्ण मंदिर:**
  - ✓ रणकपुर (राजस्थान), दिलवाड़ा (माउंट आबू), शिखरजी (झारखंड), मांगी-तुंगी पर्वत (महाराष्ट्र), एलोरा (गुफा संख्या 32), खजुराहो, उदयगिरि, सित्तनवसल।
  - ✓ **बाहुबली प्रतिमा:** श्रवणबेलगोला में चामुंडराय द्वारा 981 ई. में निर्मित (हर 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक)।
- **जैन धर्म के संरक्षक राजा:**
  - ✓ बिंबिसार, अजातशत्रु, सम्राट समप्रति, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल (हाथीगुंफा), काकुष्ठवर्मन, अमोघवर्ष, शिवमारा, कुमारपाल।

## बौद्ध धर्म -

- भिन्नमत (विधर्मी) संप्रदायों में, बौद्ध धर्म सबसे लोकप्रिय था। यह विभिन्न शासकों द्वारा संरक्षित एक शक्तिशाली धर्म के रूप में उभरा।
- संस्थापक: गौतम बुद्ध (शाक्य वंश)।
- जन्म: कपिलवस्तु (नेपाल की तलहटी में स्थित) में लुंबिनी के पास 563 ईसा पूर्व में हुआ था।
- बचपन का नाम: सिद्धार्थ।
- पिता: शुद्धोधन; माता: महामाया देवी।
- सौतेली माता/मौसी: महाप्रजापति गौतमी (लालन-पालन किया )
- पत्नी: यशोधरा; पुत्र: राहुल.
- वे 4 दृश्य जिन्होंने बुद्ध को आर्य सत्य की खोज में सांसारिक सुखों को त्यागने के लिए प्रेरित किया:
  - ✓ एक बूढ़ा आदमी
  - ✓ एक बीमार आदमी
  - ✓ एक शव
  - ✓ एक धार्मिक भिक्षुक
- 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने गृह त्याग कर दिया । वे अपने घोड़े कंथक पर सवार होकर अपने सारथी चन्ना के साथ घर से निकले। उन्होंने अपने बाल काटकर, परिधान और आभूषण अपने पिता को भिजवा दिए। इसे महाभिनिष्क्रमण के रूप में जाना जाता है।
- सिद्धार्थ विभिन्न स्थानों पर भटकते रहे और थोड़े समय के लिए अलार कलाम के शिष्य बने। उन्होंने साधु उद्दक रामपुत्र से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- उन्होंने अपना पहला उपदेश वाराणसी के निकट सारनाथ के एक मृगदाय में दिया। इस घटना को धर्मचक्र-प्रवर्तन कहा जाता है।
- उन्होंने चार आर्य सत्य और मध्य मार्ग के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संसार दुखों से भरा हुआ है और लोगों का दुख उनकी इच्छाओं के कारण है। यदि इच्छाओं को जीत लिया जाए, तो निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
- 80 वर्ष की आयु में, 483 ईसा पूर्व में, उनका कुशीनगर में महापरिनिर्वाण हुआ।

**नोट: प्रतीक -**

- जन्म: कमल/बैल
- गृह त्याग: घोड़ा
- आत्मज्ञान : बोधि वृक्ष
- पहला उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन): पहिया
- मृत्यु (परिनिर्वाण): स्तूप